INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान पटवार

राजस्थान अधीनस्थ और मंत्रिस्तरीय सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)

भाग – 4

भूगोल (भारत + राजस्थान) , कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"राजस्थान पटवारी नोट्स"** को एक विशिष्ट अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान पटवारी भर्ती परीक्षा** में पूर्ण संभव मदद करेंगे ।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशक:

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें – https://wa.link/0yupe6

Online Order करें – https://shorturl.at/pwFNP

मूल्य : (₹)	संस्करण : नवीनतम

	भारत का भूगोल	
क्र.सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	सामान्य परिचय	1
2.	भारत की स्थिति व विस्तार	2
3.	प्रमुख स्थलाकृतियाँ	8
4.	मानसून तंत्र व वर्षा का वितरण	26
5.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	39
6.	मृदा	52
7.	वन एवं वनस्पति	55
8.	प्रमुख फसलें	61
9.	प्रमुख खनिज	69
10.	ऊर्जा संसाधन	75
11.	पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय मुद्दे	81
	राजस्थान का भूगोल	
1.	सामान्य परिचय	95
2.	प्रमुख भू - आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं	114
3.	जलवायु की विशेषताएं	126
4.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	138
5.	प्राकृतिक वनस्पति	157
6.	मृदा	167
7.	प्रमुख फसलें	172
8.	राजस्थान में पशुपालन	182
9.	प्रमुख उद्योग	190
10.	प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें	193

11.	जनसंख्या-वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात एवं प्रमुख जनजातियाँ	203
12.	खनिज-धात्विक एवं अधात्विक	213
13.	ऊर्जा संसाधन- परम्परागत एवं गैर परम्परागत	225
14.	जैव विविधता एवं इनका संरक्षण	234
15.	पर्यटन स्थल एवं परिपथ	239
	कला संस्कृति	
1.	स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं • मंदिर • राजस्थान की मस्जिदें , दरगाह एवं मक़बरे • किले एवं महल(स्मारक) • राजस्थान की प्रमुख छत्तरियाँ • राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ	254
2.	चित्रकलाएं	290
3.	हस्तशिल्प	300
4.	राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं क्षेत्रीय बोलियाँ	308
5.	मेले एवं त्योंहार	321
6.	लोक संगीत एवं लोक नृत्य • राजस्थान के लोक नाट्य	333
7.	राजस्थानी संस्कृति ,परम्परा एवं विरासत	356
8.	वेशभूषा एवं आभूषण	361
9.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन	364
10.	लोक देवियाँ एवं लोक देवता	373

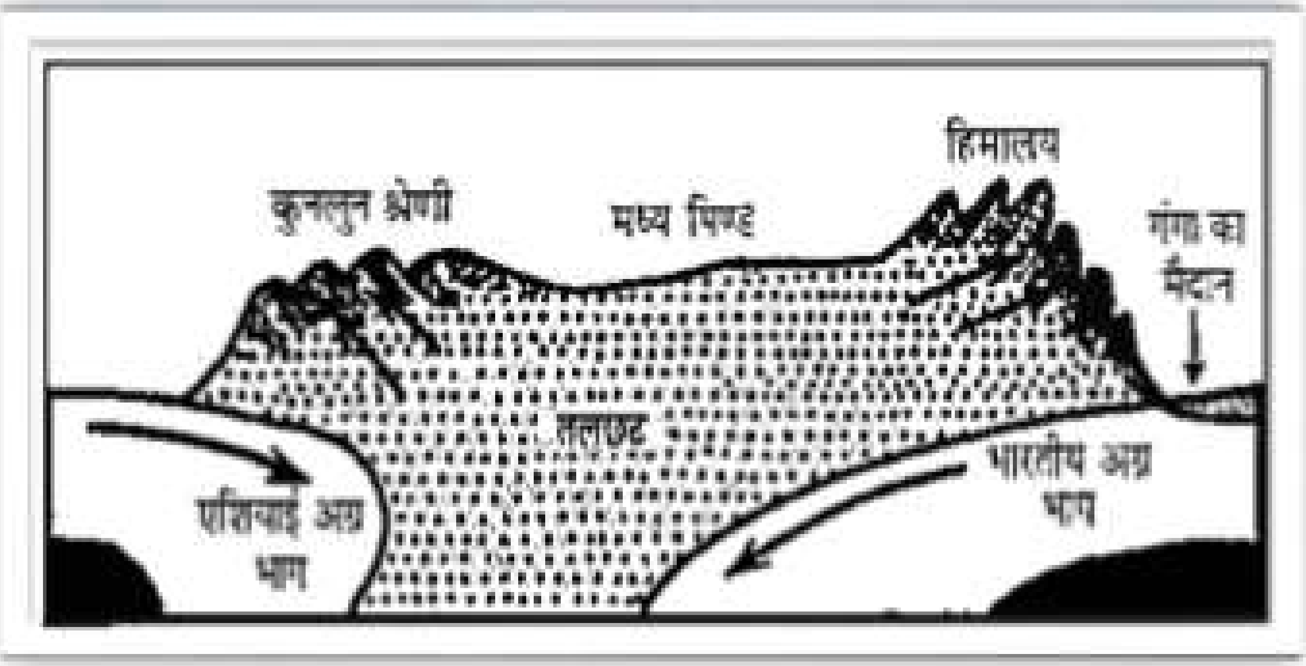

इसे भौगोलिक दृष्टि से तीन मुख्य भागों में बांटा जाता है–

1. महा हिमालय (Greater Himalayas)
2. लघु हिमालय (Lesser Himalayas)
3. शिवालिक हिमालय (Shivalik Himalayas)

NOTE- कुछ भूगोलवेत्ता ट्रांस हिमालय को भी इसका भाग मानते हैं

ट्रांस हिमालय :- ट्रांस हिमालय का निर्माण हिमालय से भी पहले हो चुका था।

- इसके अन्तर्गत काराकोरम, लद्दाख, कैलाश व जास्कर श्रेणी आती है।
- इन श्रेणियों पर वनस्पति का अभाव पाया जाता है।

(A) काराकोरम श्रेणी –
- यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है।
- इसकी खोज वर्ष 1906 स्वेन हेडन ने की थी।
- इस श्रेणी को 'एशिया की रीढ़' कहा जाता है।
- भारत की सबसे ऊँची चोटी k2 या गाडविन ऑस्टिन (8611मी.) काराकोरम श्रेणी पर ही स्थित है।
- यह विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है ।
- काराकोरम दर्रा एवं इंदिरा कॉल इसी दर्रे में स्थित है।
- काराकोरम दर्रा (विश्व का सबसे ऊँचा दर्रा) काराकोरम श्रृंखला पर स्थित कश्मीर को चीन से जोड़ने वाला संकीर्ण दर्रा है। काराकोरम श्रृंखला पर भारत का सबसे लम्बा ग्लेशियर सियाचिन स्थित है।
- विश्व का सबसे ऊँचा सैनिक अड्डा (सियाचिन) यहीं अवस्थित है। सियाचिन ग्लेशियर से नुब्रा नदी का उद्गम होता है जिसके प्रवाह क्षेत्र में घाटी का निर्माण होता है।
- काराकोरम श्रेणी पर चार प्रमुख ग्लेशियर स्थित हैं।

- सियाचिन (72 km)
- बाल्टोरो – (58km)
- बियाफो – 63 km
- हिस्पर (61 Km)

(B) लद्दाख श्रेणी – विश्व की सबसे तीव्र ढलान वाली चोटी राकापोशी (7788मी.) लद्दाख श्रेणी पर ही स्थित है ।
- लद्दाख श्रेणी दक्षिण पूर्व की ओर कैलाश श्रेणी के रूप में स्थित है।
- यह श्रेणी सिन्धु नदी व इसकी सहायक नदी के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- इस श्रेणी में भारत का सबसे ऊँचा पठार" लद्दाख का पठार" स्थित है इसी पठार पर भू तापीय ऊर्जा के लिए प्रसिद्ध पूंगा घाटी स्थित है ।
- यह भारत का न्यूनतम वर्षा वाला क्षेत्र तुल्य स्थित है ।
- इसका सर्वोच्च शिखर माउंट कैलाश है ।
- इस क्षेत्र में अलवणजल की झीलें जैसे- डल और वुलर तथा लवणजल झीलें जैसे- पैंगोन सो (गलवान घाटी के नजदीक यह विश्व की सबसे ऊँची खारे पानी की झील है) और सोमुरीरी भी पाई जाती है ।

(C) जास्कर श्रेणी –
- यह लद्दाख हिमालय के समांतर दक्षिणी दिशा में स्थित है।
- नंगा पर्वत इस पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है।
- लद्दाख व जास्कर श्रेणियों के बीच से ही सिन्धु नदी बहती है। इस श्रेणी में स्पीति नदी प्रवाहित होती है।

उत्तरी हिमालय वृहत् या हिमाद्रि या महान हिमालय –

➤ इसका विस्तार नंगा पर्वत से नामचा बरवा पर्वत तक धनुष की आकृति में फैला हुआ है जिसकी कुल लम्बाई 2500 km तक है तथा औसत ऊँचाई 5000- 6000 मी. तक है।

➤ उत्तरी हिमालय को भौतिक विभाजन के दृष्टिकोण से दो भागों में बाँटा जा सकता है-

विश्व की सर्वाधिक ऊँची चोटियाँ इसी श्रेणी पर पाई जाती है जिसमें प्रमुख है-

- माउंट एवरेस्ट (8848 मी.) विश्व की सबसे ऊँची चोटी
- कंचनजंगा (8598 मी.)
- मकालू (8481 मी.)
- धौलागिरी (8172 मी.)
- अन्नपूर्णा (8076 मी.)
- नंदा देवी (7817 मी.)
- एवरेस्ट को पहले तिब्बत में चोमोलुंगमा के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ पर्वतों की रानी।
- एवरेस्ट, कंचनजंगा, मकालू, धौलागिरि, नंगा पर्वत, नामचा बरवा इसके महत्वपूर्ण शिखर है ।
- भारत में हिमालय की सर्वोच्च ऊँची चोटी कंचनजंगा यहीं स्थित है । यह विश्व की तीसरी सबसे ऊँची चोटी है ।
- कश्मीर हिमालय करेवा (karewa) के लिए भी प्रसिद्ध है जहाँ जाफरान (केसर की किस्म)की खेती की जाती है ।
- वृहत हिमालय में जोजीला, पीर पंजाल(बनिहाल), जास्कर श्रेणी में फोटुला और लद्दाख श्रेणी में खारदुंगला जैसे महत्वपूर्ण दर्रे स्थित है ।
- सिंधु तथा इसकी सहायक नदियाँ, झेलम और चेनाब इस क्षेत्र को प्रवाहित करती है । यह हिमालय विश्वभ्रमण सौंदर्य और खूबसूरत दृश्य स्थलों के लिए जाना जाता है। हिमालय की यही रोमांचक हिमावरणी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है जिसमें प्रमुख तीर्थस्थल- जैसे वैष्णो देवी, अमरनाथ गुफा और चरार - ए - शरीफ इत्यादि है।

लघु या मध्य या हिमाचल हिमालय –महान हिमालय के दक्षिण में तथा शिवालिक के उत्तर में इसका विस्तार है। इसकी सामान्य ऊँचाई 1800- 3000मी. है ।
- इसके अन्तर्गत कई श्रेणियाँ पाई जाती है।
- पीर पंजाल (जम्मू कश्मीर)
- धौलाधार (हिमाचल प्रदेश)
- नाग टिब्बा (उत्तराखण्ड)
- कुमायूँ (उत्तराखण्ड)
- महाभारत (नेपाल)
- लघु हिमालय तथा महान हिमालय के बीच कई घाटियों का निर्माण हुआ है ।
- कश्मीर की घाटी (जम्मू कश्मीर)
- कुल्लू - काँगड़ा घाटी (हिमाचल प्रदेश)
- काठमांडू घाटी (नेपाल)
- लघु हिमालय अपने स्वास्थ्यवर्धक पर्यटन स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है जिसके अन्तर्गत शामिल है – कुल्लू, मनाली, डलहौजी, धर्मशाला, शिमला (हिमाचल प्रदेश), अल्मोड़ा, मसूरी, चमोली (उत्तराखण्ड)
- लघु हिमालय की श्रेणियों की ढालों पर शीतोष्ण घास के मैदान पाये जाते हैं जिन्हें जम्मू-कश्मीर में मर्ग (गुलमर्ग, सोनमर्ग) व उत्तराखण्ड में बुग्याल व पयार कहा जाता है।
- उप हिमालय शिवालिक या बाह्य हिमालय :-
- लघु हिमालय के दक्षिण में शिवालिक हिमालय की अवस्थिति को बाह्य हिमालय के नाम से जानते है। यह लघु हिमालय के दक्षिण में स्थित है।

- शिवालिक और लघु हिमालय के बीच स्थित घाटियों को पश्चिम में डून (जैसे- देहरादून, कोटलीडून, पाटलीडून) व पूर्व में द्वार (जैसे- हरिद्वार) कहते हैं।
- शिवालिक को जम्मू कश्मीर में कश्मीर पहाड़ियों तथा अरुणाचल प्रदेश में डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी की पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है।

चोस- (Chos)- शिवालिक हिमालय में बहने वाली जलधाराएँ चोस कहलाती हैं।

करेवा- पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के समय कश्मीर घाटी में कुछ अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों के द्वारा लेकर आए अवसाद के कारण ये झीलें अवसाद से भर गई। ऐसे उपजाऊ क्षेत्रों में जाफरान / केसर की खेती की जाती है, जिन्हें करेवा कहा जाता है।

ऋतु प्रवास- जम्मू और कश्मीर में रहने वाली जनजातियाँ गुज्जर, बकरवाल, भूटिया, शेरपा इत्यादि ग्रीष्म हिमालय में बर्फ के पिघलने के उपरान्त निर्मित होने वाले घास के मैदानों में अपने पशुओं को चराने के लिए प्रवास करते हैं तथा वे पुनः सर्दियों के दिनों में मैदानी भागों में आ जाते हैं जिसे ऋतु प्रवास कहा जाता है।

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ हिमालय का ही विस्तार है।

- नामचा बरवा के निकट हिमालय अक्षसंघीय मोड़ के कारण दक्षिण की ओर मुड़ जाता है। पटकाईबुम, नागा, मणिपुर, लुशाई, या मिजो पहाड़ी आदि हिमालय का विस्तार बन जाता है यह पहाड़ियाँ भारत एवं म्यांमार सीमा पर स्थित हैं।

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ काफी कटी - फटी हैं।

- पूर्वांचल की पहाड़ियाँ भारतीय मानसून को दिशा प्रदान करती हैं इस तरह यह पहाड़ियाँ जल विभाजक के साथ - साथ जलवायु विभाजक हैं।

अरुणाचल प्रदेश	डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी (शिवालिक हिमालय) पटकाई बुम (महान हिमालय)
नागालैण्ड	नागा पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी माउंट सरामाटी (3826 मीटर) है। इस पर नागालैण्ड की राजधानी कोहिमा (भारत के किसी राज्य की सबसे पूर्वोत्तर राजधानी) स्थित है।

मणिपुर	मणिपुर की पहाड़ी या लैमाटोल पहाड़ी इस पर लोकटक झील स्थित है। इस झील में भारत का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान केबुल लामजाओ स्थित है।
मिजोरम	मिजो पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी ब्लू माउंटेन है।
मेघालय	गारो, खासी व जयंतिया पहाड़ियाँ (प्रायद्वीपीय पठारी भाग का हिस्सा) गारो खासी एवं जयंतिया पहाड़ी शिलांग के पठार पर अवस्थित हैं।
असम	मिकिर, रेंगमा व बरेल पहाड़ियाँ NOTE- बरेल पहाड़ी प्रायद्वीपीय भारत को महान हिमालय से अलग करती है।

हिमालय का प्रादेशिक विभाजन- सिडनी बुराड ने हिमालय का प्रादेशिक विभाजन (नदियों के आधार पर) किया तथा हिमालय को 4 प्रादेशिक भागों में बाँटा ।

हिमालय	लम्बाई (किमी.)	नदियाँ	विस्तार
पंजाब हिमालय	560	सिन्धु - सतलुज	जम्मू-कश्मीर, लद्दाख व हिमाचल प्रदेश
कुमायूँ हिमालय	320	सतलुज-काली	उत्तराखंड
नेपाल हिमालय	800	काली-तिस्ता	नेपाल, सिक्किम व प. बंगाल
असम हिमालय	750	तिस्ता-ब्रह्मपुत्र	सिक्किम, प. बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, भूटान व चीन

हिमालय के प्रमुख दर्रे

I. **पश्चिमी हिमालय के दर्रे : -**

काराकोरम: - यह काराकोरम श्रेणी में अवस्थित है, जो उत्तर में स्थित है इसकी ऊँचाई 5000 मी. है और भारत के लद्दाख को चीन के शिनजियांग प्रान्त से मिलाता है।

जम्मू - कश्मीर के दर्रे-

बनिहाल दर्रा - जम्मू से श्रीनगर जाने का सड़क मार्ग प्रदान करता है। इस दर्रे में भारत की सबसे लम्बी सुरंग चेनानी नाशरी सुरंग (9.2 किमी. वर्तमान में नाम बदल श्यामा प्रसाद मुखर्जी) व जवाहर सुरंग (2531मी.) स्थित है ।

पीरपंजाल दर्रा- जम्मू से श्रीनगर

जोजिला दर्रा- श्रीनगर से कारगिल

लद्दाख के दर्रे-

फातुला दर्रा- कारगिल से लेह

खारदुंगला दर्रा- लेह से नुब्रा घाटी यह विश्व का सबसे ऊँचा मोटर वाहन चलाने योग्य दर्रा था (18380 फीट) लेकिन वर्तमान में विश्व का सबसे ऊँचा मोटरवाहन चलाने योग्य दर्रा उमलिंगला दर्रा (19300 फीट) है ।

चांगला : - यह लद्दाख को तिब्बत से मिलाता है, यह शीत ऋतु में हिमपात के लिए बंद रहता है ।

लानक ला : - लद्दाख के चीन अधिकृत अक्साई चीन में स्थित है और तिब्बत की राजधानी तथा लद्दाख के बीच सम्पर्क बनाता है ।

हिमाचल प्रदेश के दर्रे-

बारालाचा ला :- यह मंडी और लेह को आपस में जोड़ता है इसी से मनाली – लेह सड़क गुजरता है। यह शीत ऋतु बंद रहता है

रोहतांग :- यह हिमाचल के लेह और स्पीति के बीच में संपर्क बनाता है इसी से मनाली – लेह सड़क गुजरता है । इस पर अटल सुरंग (9.02) स्थित है ।

शिपकी ला : - हिमाचल प्रदेश को चीन से मिलाता है

देबसा दर्रा- मनाली से शिमला

प्रायद्वीपीय पठार का महत्त्व

- पठार के अपक्षय व अपरदन से काली मिट्टी का विकास हुआ है जो कपास के खेती के लिए उपयुक्त होता है।
- पश्चिमी घाट पर अधिक वर्षा वाले समतल उच्च भागों पर लैटेराइट मिट्टी का विकास हुआ है जिस पर चाय कॉफी मसाला की कृषि होती है।
- पश्चिमी घाट पर अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में सदाबहार वन पाए जाते है।
- प्रायद्वीपीय पठार भारत के अधिकांश खनिज संसाधनों की पूर्ति करता है।
- यहाँ की भू-गर्भिक संरचना सोना तांबा लोहा कोयला यूरेनियम आदि खनिजों से आबाद है।
- द्वीप समूह- भारत में सबसे लंबी तट रेखा (Coast line) गुजरात राज्य की है।

भारतीय सीमा में निम्नलिखित द्वीप समूह शामिल है–

द्वीपीय क्षेत्र	
बंगाल की खाड़ी के द्वीप	अरब सागर के द्वीप
अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह	पिरोटन द्वीप
न्यू मूर द्वीप	दीव
सागर द्वीप	करम्बे
व्हीलर द्वीप (कलाम द्वीप)	अलियाबेट
श्री हरिकोटा द्वीप	खादियाबेट
पंबन द्वीप	बुचर्स द्वीप
कच्चातिवु द्वीप	एलिफेंटा
	केनरी
	बुचर
	भटकल
	लक्षद्वीप

श्रीहरिकोटा

- यह आंध्रप्रदेश के तट पर स्थित है।
- इसी द्वीप में भारत का एकमात्र उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र स्थित है।

पंबन द्वीप

- यह मन्नार की खाड़ी में अवस्थित है
- यह आदम ब्रिज अथवा रामसेतु का ही भाग है जो भारत व श्रीलंका के बीच स्थित है
- यहीं रामेश्वरम् स्थित है।

न्यू मूर द्वीप

- यह बंगाल की खाड़ी में भारत व बांग्लादेश की सीमा पर अवस्थित है जिसके कारण दोनों देशों में अधिकार को लेकर विवाद चलने के कारण छोड़ दिया गया।
- भारत के हिस्से में आए भाग का अधिकांश भाग जलमग्न रहता है।

अब्दुल कलाम द्वीप

- यह ओडिशा के तट पर स्थित है।
- इसका प्रयोग भारत अपने प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम के परीक्षण के लिए करता है।
- **अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह**
- यह द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित है।
- अंडमान समूह में मध्य अण्डमान (Middle Andaman) सबसे बड़ा है।
- ये द्वीप समूह देश के उत्तर-पूर्व में स्थित पर्वत श्रृंखला का विस्तार है।
- उत्तर अण्डमान में स्थित सैडल पीक (SadalesPeak) सबसे ऊँची (लगभग 737 मीटर) चोटी है।
- निकोबार समूह में ग्रेट निकोबार सबसे बड़ा है।

इंडो ब्रह्म नदी- भू-वैज्ञानिक मानते हैं कि मायोसीन कल्प में लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाखों वर्ष पहले एक विशाल नदी थी जिसे शिवालिक या इंडो - ब्रह्म नदी कहा गया है।

इंडो ब्रह्म नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र -

1. पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ
2. मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ
3. पूर्व में ब्रह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

<u>सिन्धु नदी तंत्र</u>

<u>सिन्धु नदी तंत्र</u>

यह विश्व की सबसे बड़ी नदी श्रेणियों में से एक है, जिसका क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km है। भारत में इसका क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी है।

- सिन्धु नदी की कुल लंबाई 2,880 किमी. है। परंतु भारत में इसकी लम्बाई केवल 1,114 km है। भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे पश्चिमी नदी है।
- सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में स्थित कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक ग्लेशियर (हिमनद) से होता है। तिब्बत में इसे सेंग खुब अथवा सिंगी खंबान कहते हैं।
- सतलुज, ब्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।
- अन्य सहायक नदियाँ – श्यायक, ग्यांग, शिगार, गिलगिट, श्योक, हुंजा, कुर्रम, कुनार, नागरिल व द्रास, गोमल।
- अंततः यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती है। यहाँ दाहिने तट पर काबुल, तोची, गोमल, विबोआ और संगर नदियाँ इसमें मिलती हैं।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती है। पंचनद नाम पंजाब की पाँच मुख्य नदियों सतलुज, ब्यास, रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया है।

सिन्धु की प्रमुख सहायक नदियाँ : -

1. सतलुज नदी 2. ब्यास नदी
3. रावी नदी 4. चिनाब नदी
5. झेलम नदी

सिन्धु नदी तंत्र

सिन्धु जल संधि (1960)

तीन पूर्वी नदियों - ब्यास, रावी, सतलुज का नियंत्रण भारत तथा 3 पश्चिमी नदियां सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया -

1. ब्यास, रावी, सतलुज	80% पानी भारत
	20% पानी पाकिस्तान
2.सिन्धु, झेलम, चिनाब	80% पानी पाकिस्तान
	20% पानी भारत

सतलज नदी -

- यह एक पूर्ववर्ती नदी है जो तिब्बत में लगभग 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर के निकट राक्षस ताल झील से निकलती है। यहाँ इसे लॉगचेन खंबाब के नाम से जाना जाता है।
- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए भारत - तिब्बत सीमा के समीप शिपकी ला दर्रे के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समानान्तर बहते हुए अंत में चिनाब नदी में मिल जाती है।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- सतलुज, सिन्धु नदी की महत्वपूर्ण सहायक नदी है।
- इस नदी पर हिमाचल प्रदेश में नाथपा झाकड़ी परियोजना तथा भाखड़ा बाँध व इसके पीछे गोविंद सागर जलाशय तथा पंजाब के रोपड़ में नांगल बाँध बना हुआ है।

ब्यास नदी (विपाशा नदी)

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्वपूर्ण सहायक नदी है। रोहतांग दर्रे के निकट ब्यास कुंड से निकलती है।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- यह नदी कुल्लू घाटी से गुजरती है। तथा धौलाधर श्रेणी में काती और लारजी में महाखड्ड का निर्माण करती है।
- यह पंजाब के मैदान में प्रवेश करती है जहाँ हरिके बैराज के पास सतलुज नदी में जा मिलती है।

रावी नदी (परुष्णी नदी)

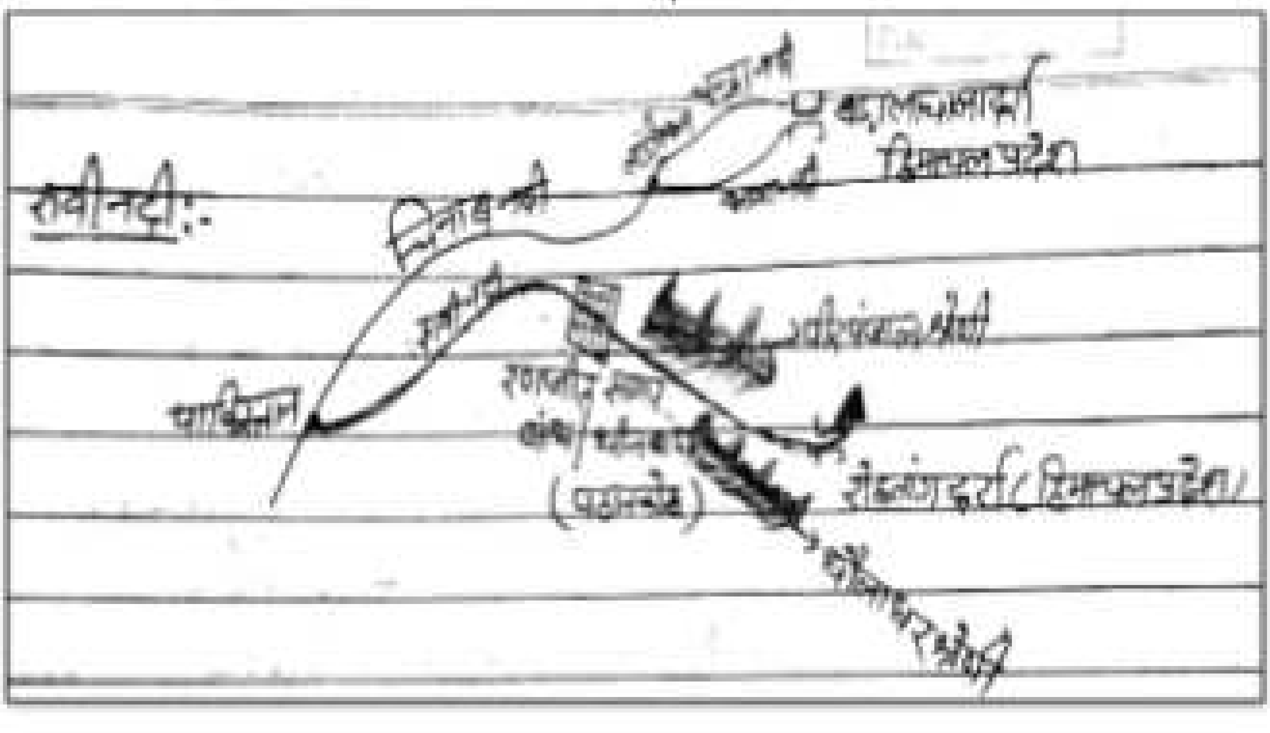

यह नदी सिन्धु की अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है जो हिमाचल की कुल्लू की पहाड़ियों में स्थित रोहतांग दर्रे के पश्चिम से निकलती है तथा चंबा घाटी से होकर बहती है।

- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, पंजाब
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सतलज सिन्धु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के दक्षिण-पूर्वी भाग व धौलाधर के बीच से प्रवाहित होती है।
- इस नदी पर पठानकोट(पंजाब) के निकट थीन बाँध / रणजीत सागर बाँध बना हुआ है।

चिनाब नदी (अस्किनी)

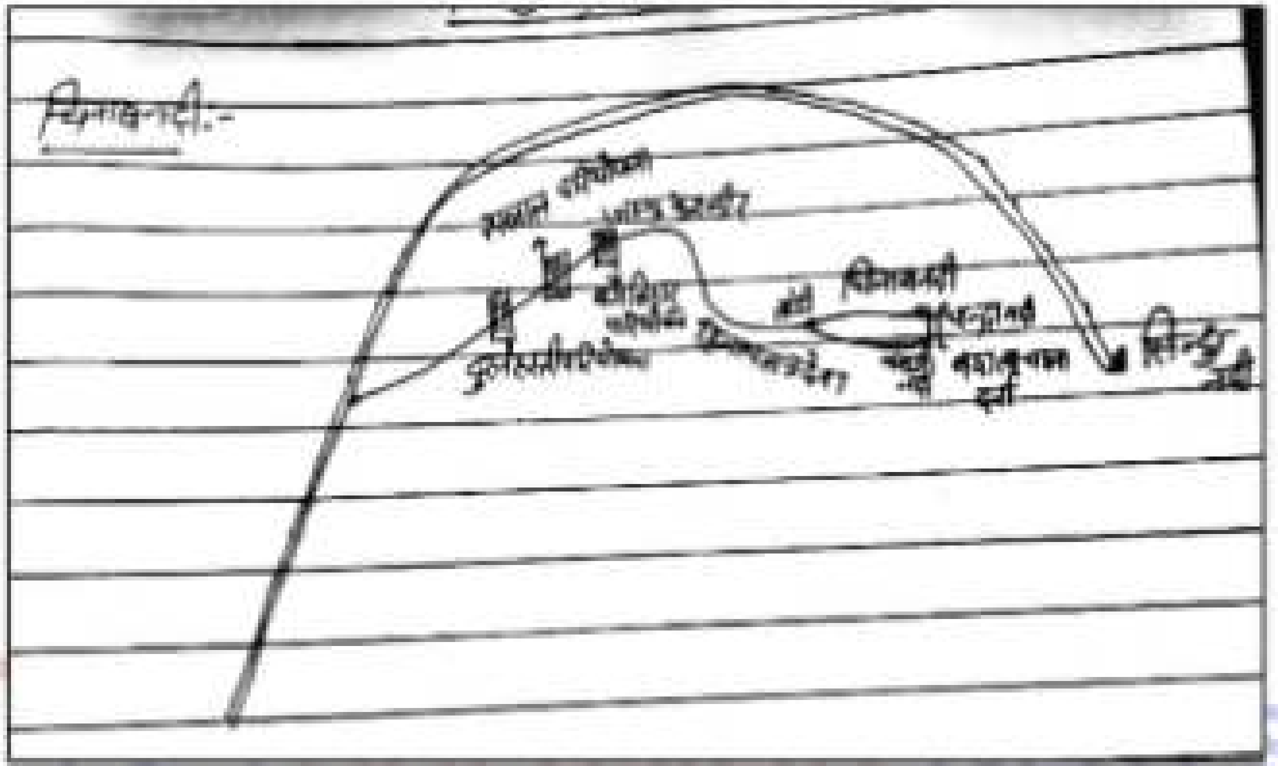

यह सिन्धु की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

- इसका उद्गम हिमाचल प्रदेश के निकट बारालाचला दर्रे से चंद्रा और भागा नामक दो सरिताओं के मिलने से होता है ये सरिताएँ हिमाचल प्रदेश में केलांग के निकट तांडी में आपस में मिलती हैं, इसलिए इसे चंद्रभागा के नाम से भी जाना जाता है।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले भारत में इस नदी का बहाव क्षेत्र 1,180 किमी. है।
- प्रवाह क्षेत्र- हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर
- इस नदी पर जम्मू कश्मीर में बगलिहार परियोजना, दुलहस्ती परियोजना व सलाल परियोजना का निर्माण किया गया है।

झेलम नदी (वितस्ता)

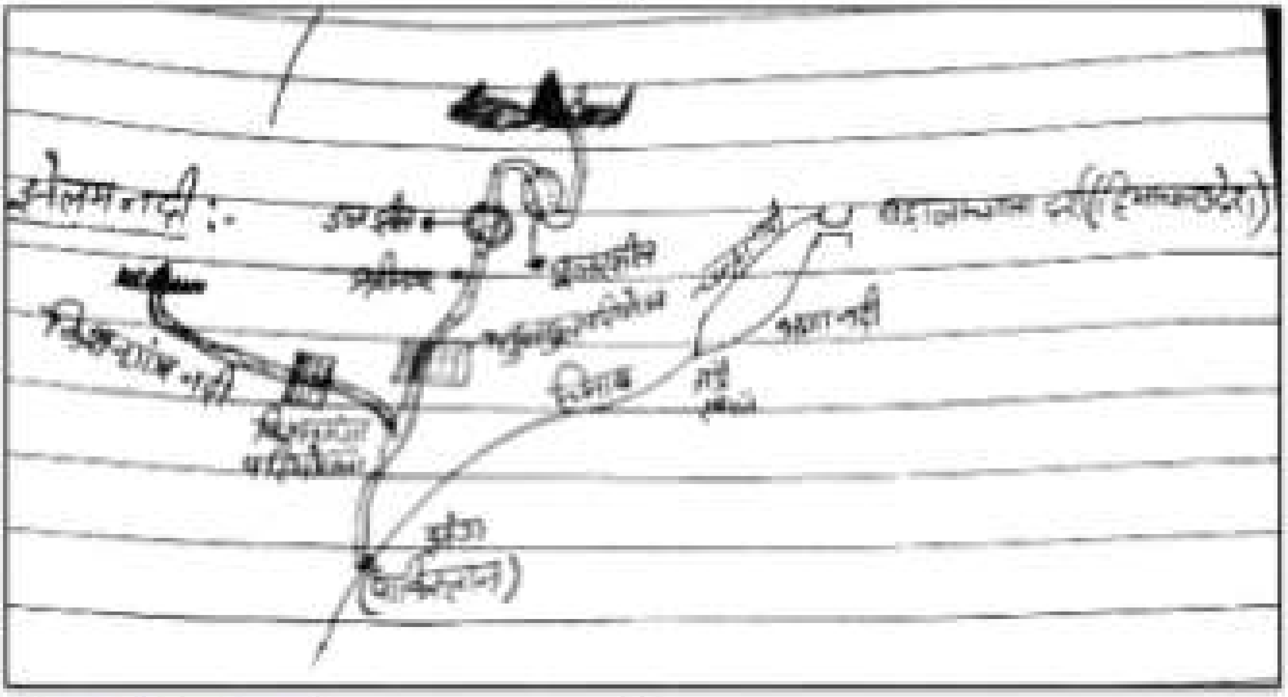

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – 1

सामान्य परिचय

प्रिय छात्रों, राजस्थान के भूगोल का अध्ययन करने के लिए हम इसे दो भागों में विभाजित करेंगे-

1. सामान्य परिचय
2. भौतिक स्वरूप

1. सामान्य परिचय –

प्रिय छात्रों, सामान्य परिचय के अंतर्गत हम राजस्थान के निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे-

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख

(ख) राजस्थान की स्थिति

(ग) राजस्थान का विस्तार

(घ) राजस्थान का आकार

(ङ) राजस्थान की आकृति

2. भौतिक स्वरूप –

इसी प्रकार भौतिक स्वरूप के अंतर्गत हम निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे –

(क) पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

(ख) अरावली पर्वतीय प्रदेश

(ग) पूर्वी मैदानी प्रदेश

(घ) दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश

1. राजस्थान का परिचय

राजस्थान शब्द का अर्थ :- राजाओं का स्थान

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख :-

- राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी साहित्य विक्रम संवत 682 ई. में उत्कीर्ण बसंतगढ़ (सिरोही जिला) के शिलालेख में मिलता है।
- मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक "मुहणोत नैणसी" ने भी अपनी पुस्तक "नैणसी री ख्यात" में भी राजस्थान शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता।
- महर्षि वाल्मीकि ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुकान्तार" शब्द का उल्लेख किया है।
- जॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने सन् 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को "राजपूताना" शब्द कहकर पुकारा था। इस तथ्य का उल्लेख विलियम फ्रैंकलिन ने अपनी पुस्तक "मिलिट्री मेमोरीज ऑफ जॉर्ज थॉमस" में किया है।

जॉर्ज थॉमस का परिचय :-

- जॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे, जो कि 18 वीं सदी में भारत आए और 1798 से 1801 तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे।
- इन्होंने राजस्थान को "राजपूताना" शब्द इसलिए कहा क्योंकि मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन था। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था।

विलियम फ्रैंकलिन :-

- विलियम फ्रैंकलिन मूल रूप से लंदन के निवासी थे यह जॉर्ज थॉमस के घनिष्ठ मित्र थे। उन्होंने 1805 ई. में जॉर्ज थॉमस के ऊपर "A Military Memories of George Thomas" नामक पुस्तक लिखी थी।
- अकबर के नवरत्नों में से एक मध्यकालीन इतिहासकार "अबुल फजल" ने इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुभूमि" शब्द का प्रयोग किया है।
- 1829 ईस्वी में "कर्नल जेम्स टॉड" ने अपनी पुस्तक "एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" में सर्वप्रथम राजस्थान को "रायथान, रजवाड़ा" व राजस्थान का नाम दिया था।

कर्नल जेम्स टॉड :-

- कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1822 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश एजेंट भी रहे।
- कर्नल जेम्स टॉड ब्रिटेन के मूल निवासी थे, उन्होंने अपने घोड़े पर घूम - घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें घोड़े वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है।
- कर्नल जेम्स टॉड को "राजस्थान के इतिहास का पितामह" कहा जाता है।
- कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" को "सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" के नाम से भी जानते हैं
- इस पुस्तक का पहली बार हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार "गौरीशंकर –हीराचंद ओझा" ने किया था इसे हिंदी में "प्राचीन राजस्थान का विश्लेषण" कहते है।
- कर्नल टॉड नौकरी के सिलसिले में अजमेर और उदयपुर में कई जगह पर रहे थे- उनमें बीच मार्ग पड़ने में छोटा सा गाँव गोरधनपुरा भी था- जो जंगलों और अरावली-पहाड़ों से घिरा हुआ है।
- उन्हें यह जगह पसंद आई तो उदयपुर के महाराणा भीम सिंह की सहमति से रहने के लिए गोरधनपुरा में एक छोटा सा किला बनवा लिया।
- महाराणा भीम सिंह ने कर्नल की सेवाओं से प्रभावित होकर गाँव का नाम टॉडगढ़ रख दिया, जो कालान्तर में टाडगढ़ कहलाने लगा। टाडगढ़ आज अजमेर जिले की एक तहसील का मुख्यालय है।
- कर्नल टॉड के किले में वर्तमान में सरकारी स्कूल चलता है।

(ख) राजस्थान की स्थिति- प्रिय छात्रों, राजस्थान की स्थिति को हम सर्वप्रथम पृथ्वी पर तत्पश्चात एशिया में और फिर भारत में देखेंगे।

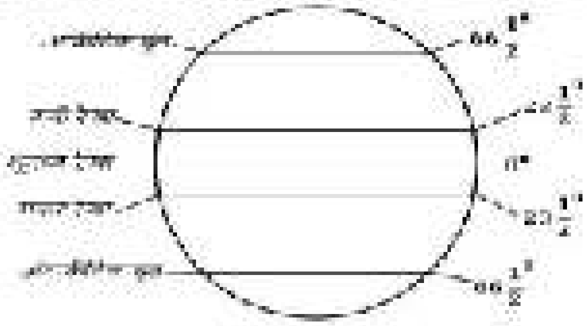

मानचित्र – 1

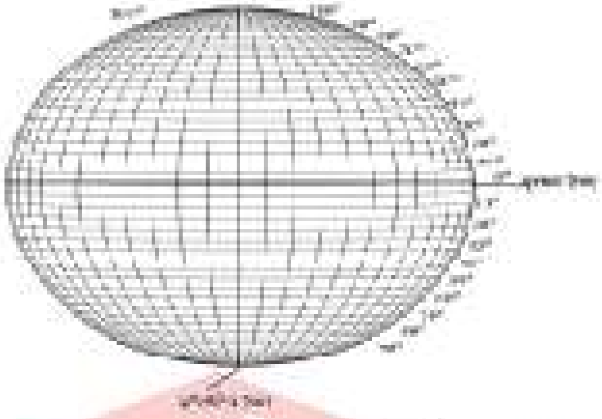

मानचित्र – 2

नोट – भूमध्य रेखा :- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा है। यह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है।

इस रेखा पर प्रायः वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा कहा जाता है।

विषुवत रेखा के उत्तर में कर्क रेखा है व दक्षिण में मकर रेखा है।

नोट- पृथ्वी या ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "उत्तर - दक्षिण तथा पूर्व - पश्चिम" में विभाजित किया गया है। इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते हैं।

अक्षांश रेखाएँ - वह रेखाएं जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर खींची हुई हैं, अर्थात् भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते हैं।

भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है। (देखें मानचित्र-1)

ग्लोब पर कुल अक्षांशों की संख्या (90° उत्तरी गोलार्द्ध से और 90° दक्षिणी गोलार्द्ध से) कुल 180° है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181° होती है।

देशांतर रेखाएं- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360° रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है।

पृथ्वी के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली और उत्तर - दक्षिण दिशा में खींची गयी काल्पनिक रेखाओं को याम्योत्तर, देशान्तर, मध्यान्तर रेखाएं कहते हैं।

- ग्रीनविच, (जहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है) से गुजरने वाली याम्योत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस याम्योत्तर को प्रमुख याम्योत्तर कहते हैं।
- इसका मान 0° देशांतर है तथा यहाँ से हम 180° डिग्री पूर्व या 180° डिग्री पश्चिम तक गणना करते हैं।

नोट –उपर्युक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक "भारत एवं विश्व का भूगोल पढ़ें"।

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°03" से 30°12" उत्तरी अक्षांश के मध्य है, जिसका अंतर 7°09 मिनट है, जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर है, जिसका अंतर 8°47 मिनट है (देखें मानचित्र A, B)

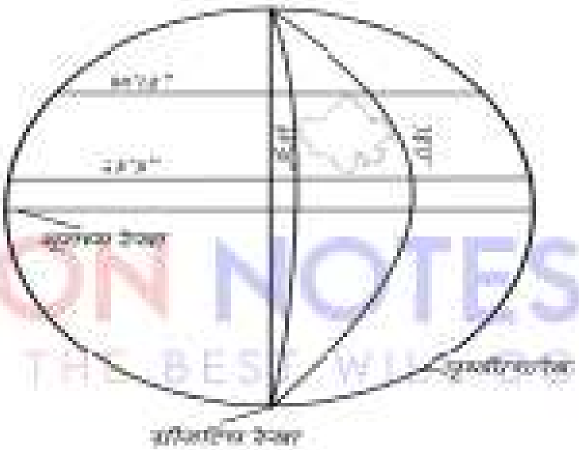

(मानचित्र-A)

नोट- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार 7°9" (30°12" - 23°03") है तथा कुल देशांतरीय विस्तार 8°47" (78°17" - 69°30") है।

1° = 4 मिनट

1° =111.4 किलोमीटर होता है।

- राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है।
- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है।

प्रश्न. 1 भारत के कुल भू – भाग का कितना प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान में है।

(A) 10.4 प्रतिशत (B) 7.9 प्रतिशत
(c) 13.3 प्रतिशत (D) 11.4 प्रतिशत (A)

- जो हिमाच्छादित हिमालय की ऊंचाइयों से शुरू होकर दक्षिण के विषुवतीय वर्षा वनों तक फैला हुआ है। जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।
- 1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था, लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग होने हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य (क्षेत्रफल की दृष्टि से) राजस्थान बन गया ।

2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 68,548,437 थी जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है।

➢ **कर्क रेखा राजस्थान में स्थिति-**

प्रधान मध्याह्न रेखा

<u>**कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-**</u>

1. गुजरात 2. राजस्थान 3. मध्यप्रदेश 4. छत्तीसगढ़ 5. झारखंड 6. पश्चिम बंगाल 7. त्रिपुरा 8. मिजोरम

राजस्थान में कर्क रेखा **बाँसवाड़ा** जिले के मध्य से **कुशलगढ़ तहसील** से गुजरती है इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिले को भी स्पर्श करती है अर्थात् **कुल दो जिलों से होकर गुजरती है ।**

राजस्थान में कर्क रेखा की कुल **लंबाई 26 किलोमीटर** है। राजस्थान का अधिकांश भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है।

राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बाँसवाड़ा है।

भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती हैं, अतः वहाँ पर तापमान अधिक होता है। जैसे - जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है, वैसे - वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है।

राजस्थान में **बाँसवाड़ा जिले में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी** पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

कारण - बाँसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है तथा श्रीगंगानगर सबसे उत्तर में स्थित है।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बाँसवाड़ा होना चाहिए एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए लेकिन वर्तमान में राज्य का **सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरू** है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है । इसका कारण यहाँ पाई जाने वाली रेत व जिप्सम है ।

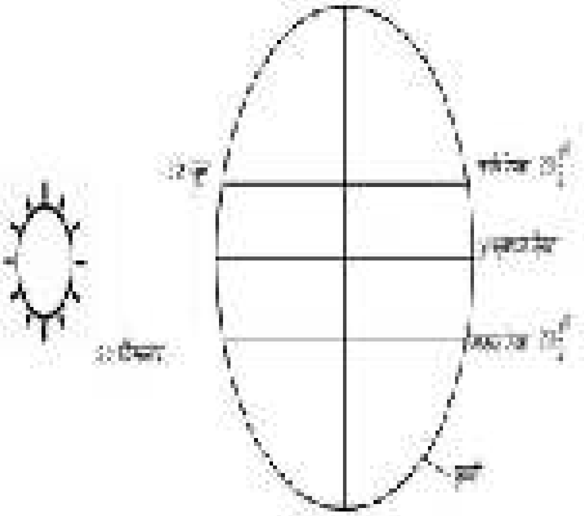

<u>चित्र:- मानचित्र को ध्यान से समझिए</u>

नोट - जैसे कि ऊपर दिए गए मानचित्र में समझाया है कि, सूर्य 21 जून को सीधा कर्क रेखा पर और 22 दिसंबर को सीधा मकर रेखा पर चमकता है।

- इसके अलावा सूर्य 21 मार्च और 23 सितंबर को सीधे भूमध्य रेखा पर चमकता है। अर्थात् 21 जून को कर्क रेखा पर सीधे चमकने के बाद जुलाई से दिसंबर तक जैसे -जैसे समय बढ़ता जाता है वैसे - वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश मकर रेखा की ओर बढ़ता जाता है, फिर 22 दिसंबर तक मकर रेखा पर पहुंचने के बाद जनवरी, फरवरी से जून तक जैसे-जैसे समय बढ़ता है वैसे - वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश कर्क रेखा की ओर बढ़ता है।अर्थात् सूर्य की सीधी किरणें कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच में पड़ती है इस क्षेत्र को **उष्णकटिबंधीय क्षेत्र** कहते है। ध्रुवों पर सूर्य की किरणें ना पहुंचने के कारण वहाँ वर्ष भर बर्फ पाई जाती है।

पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण **सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर** में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

<u>विस्तार:-</u>

राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई **826 किलोमीटर** है तथा इसका विस्तार उत्तर में

श्रीगंगानगर जिले के कोणा गाँव से दक्षिण में बाँसवाड़ा

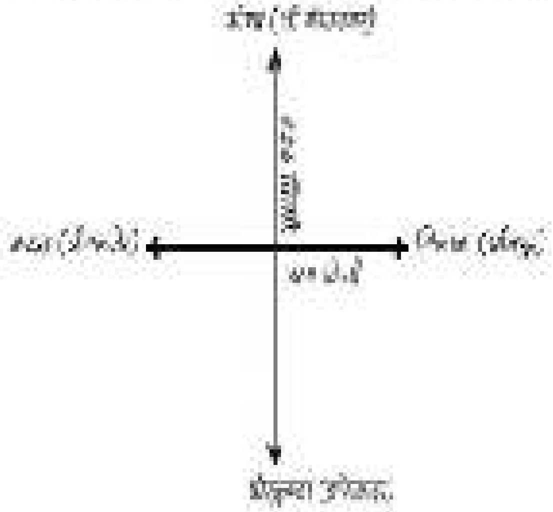

जिले की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गाँव तक है। इसी प्रकार पूर्व से पश्चिम तक की चौड़ाई 869 किलोमीटर है तथा विस्तार पूर्व में धौलपुर जिले के जगमालपुरा की ढाणी, सिलाना गाँव, राजाखेड़ा तहसील से पश्चिम में जैसलमेर जिले के कटरा गाँव (सम-तहसील) तक है।

आकृति

विषम कोणीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है।

राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोमीटर (1070 अंतर्राष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

रेडक्लिफ रेखा

- रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सिरिल एम रेडक्लिफ को माना जाता है।
- रेडक्लिफ रेखा 17 अगस्त 1947 को भारत विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा बन गई।
- इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3310 किलोमीटर है।

रेडक्लिफ रेखा पर भारत के तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश स्थित है।

1. पंजाब (547 किमी.)
2. राजस्थान (1070 किमी.)
3. गुजरात (512 किमी.)
4. जम्मू-कश्मीर (1216 किमी.)
5. लेह-लद्दाख

- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की सर्वाधिक सीमा - (1070 किमी.)
- रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात (512 किमी.)

राजस्थान के 2 ऐसे जिले हैं जिनकी अंतर्राष्ट्रीय एवं अंतर्राज्यीय सीमा है –

1. श्रीगंगानगर (पाकिस्तान + पंजाब)
2. बाड़मेर (पाकिस्तान + गुजरात)

राजस्थान के 4 जिले ऐसे हैं जिनकी सीमा दो – दो राज्यों से लगती है-

- हनुमानगढ़ :- पंजाब + हरियाणा
- धौलपुर :- उत्तरप्रदेश + मध्यप्रदेश
- बाँसवाड़ा :- मध्यप्रदेश + गुजरात
- डीग :- उत्तरप्रदेश + हरियाणा

राजस्थान की पाकिस्तान के साथ सीमा

❖ **महत्वपूर्ण प्रश्न**

1. राजस्थान का प्रवेश द्वार किसे कहा जाता है – भरतपुर
2. महुआ के पेड़ पाये जाते है – उदयपुर व चित्तौड़गढ़
3. राजस्थान में छप्पनिया अकाल किस वर्ष पड़ा - 1956 वि.सं.
4. राजस्थान में मानसून वर्षा किस दिशा में बढ़ती है – दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व में
   नोट :- लेकिन राजस्थान में उत्तर – पश्चिम से दक्षिण - पूर्व की ओर वर्षा की मात्रा में वृद्धि होती है।
5. राजस्थान में गुरु शिखर चोटी की ऊँचाई कितनी है - 1722 मीटर
6. राजस्थान में किस शहर को सन सिटी के नाम से जाना जाता है – जोधपुर को
7. राजस्थान की आकृति है – विषम कोण चतुर्भुज
8. राजस्थान के किस जिले का क्षेत्रफल सबसे ज्यादा है – जैसलमेर
9. राज्य की कुल स्थलीय सीमा की लम्बाई है - 5920 किमी
10. राजस्थान का सबसे पूर्वी जिला है – धौलपुर
11. राजस्थान का सागवान कौन सा वृक्ष कहलाता है – रोहिड़ा
12. राजस्थान के किस क्षेत्र में सागवान के वन पाए जाते है – दक्षिणी
13. जून माह में सूर्य किस जिले में लम्बवत् चमकता है – बाँसवाड़ा
14. राजस्थान में पूर्ण मरुस्थल वाले जिले हैं- जैसलमेर, बाड़मेर
15. राजस्थान के कौन से भाग में सर्वाधिक वर्षा होती है – दक्षिणी – पूर्वी
16. राजस्थान में सर्वाधिक तहसीलों की संख्या किस जिले में है – जयपुर
17. राजस्थान में न्यूनतम सूर्योदय किस जिले में होता है – धौलपुर
18. उड़िया पठार किस जिले में स्थित है – सिरोही
19. राजस्थान में किन वनों का अभाव है – शंकुधारी वन
20. राजस्थान के क्षेत्रफल का कितना भू-भाग रेगिस्तानी है – लगभग दो-तिहाई
21. राजस्थान के पश्चिम भाग में पाए जाने वाला सर्वाधिक विषैला सर्प – पीवणा सर्प
22. राजस्थान के पूर्णतः वनस्पति रहित क्षेत्र - सम (जैसलमेर)
23. राजस्थान के किस जिले में सूर्य किरणों का तिरछापन सर्वाधिक होता है –श्रीगंगानगर
24. राजस्थान का क्षेत्रफल इजरायल से कितना गुना है - 17 गुना बड़ा है।

25. राजस्थान की 1070 किमी. लम्बी पाकिस्तान से लगी सीमा रेखा का नाम – रेडक्लिफ रेखा
26. कर्क रेखा राजस्थान के किस जिले से छूती हुई गुजरती है – डूंगरपुर व बाँसवाड़ा को
27. राजस्थान में जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा जिला – जयपुर
28. थार के रेगिस्तान के कुल क्षेत्रफल का कितना प्रतिशत राजस्थान में है – 58 प्रतिशत
29. राजस्थान के रेगिस्तान में रेत के विशाल लहरदार टीले को क्या कहते हैं – धोरे
30. राजस्थान का एकमात्र जीवाश्म पार्क स्थित है – अकाल गाँव (जैसलमेर)

<u>राजस्थान की अन्य राज्यों से सीमा</u>

राजस्थान के साथ जिन राज्यों की सीमा लगती है उन राज्यों के नाम :-

शॉर्ट ट्रिक :- "पं. हरि उत्तर में गुम गया"

सूत्र		राज्य
पं	-	पंजाब
हरि	-	हरियाणा
उत्तर	-	उत्तर प्रदेश
मे	-	मध्य प्रदेश
गु	-	गुजरात

पंजाब (89 किमी.)

- राजस्थान के दो जिलों की सीमा पंजाब से लगती है तथा पंजाब के दो जिले फाजिल्का व मुक्तसर की सीमा राजस्थान से लगती है।
- पंजाब के साथ सर्वाधिक सीमा श्रीगंगानगर व न्यूनतम सीमा हनुमानगढ़ की लगती है।
- पंजाब सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा दूर जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ है।
- पंजाब सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला हनुमानगढ़ व छोटा श्रीगंगानगर जिला है।

शॉर्ट ट्रिक

पंजाब की सीमा से सटे राजस्थान राज्य के जिले हैं।

"श्री हनुमान"

सूत्र		जिला
श्री	-	श्रीगंगानगर
हनुमान	-	हनुमानगढ़

हरियाणा (1262 किमी.)

- राजस्थान के 8 जिलों (खैरथल-तिजारा, नीमकाथाना, अलवर, हनुमानगढ़, झुंझुनू, कोटपुतली-बहरोड़, डीग और चूरू) की सीमा हरियाणा के 7 जिलों (सिरसा, फतेहाबाद, हिसार, भिवानी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, मेवात) से लगती है।
- हरियाणा सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला चूरू है।
- हरियाणा के साथ सर्वाधिक सीमा हनुमानगढ़ व न्यूनतम सीमा अलवर की लगती है तथा सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ है।
- मेवात (नूह) वह विभिन्न जिला है जो राजस्थान के अलवर जिले को छूता है।

- इस जिले में 8 तहसील (डीडवाना, मौलासर, छोटी खाटू, लाडनूं, परबतसर, मकराना, नावां, कुचामनसिटी) है।

डीग -
- भरतपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला डीग गठित किया गया है।
- इस जिले में 9 तहसील (डीग, नदबई, कुम्हेर, रारह, नगर, सीकरी, कामां, जुरहरा, पहाड़ी) है।

फलौदी :
- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला फलौदी गठित किया गया है।
- इस जिले में 8 तहसील (फलौदी, लोहावट, आऊ, देचू, सेतरावा, बाप, घंटियाली, बापिणी) है।

जोधपुर (ग्रामीण)
- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर जोधपुर (ग्रामीण) जिला गठित किया गया है।
- जोधपुर (ग्रामीण) जिले में 15 तहसील (जोधपुर उत्तर तहसील (जोधपुर का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग), जोधपुर दक्षिण तहसील (जोधपुर का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग) कुड़ी भगतासनी, लूणी, झंवर, बिलाड़ा, भोपालगढ़, पीपाड़सिटी, ओसियाँ, तिंवरी, बावड़ी, शेरगढ़, बालेसर, सेखाला व चामू) है।

जोधपुर :
- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर जोधपुर जिला गठित किया गया है।
- इस जिले में 2 तहसील जोधपुर उत्तर (जोधपुर तहसील का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग), जोधपुर दक्षिण (जोधपुर तहसील का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग) है।

गंगापुरसिटी -
- जिला मुख्यालय – गंगापुरसिटी
- सवाईमाधोपुर एवं करौली जिलों का पुनर्गठन कर नया जिला गंगापुरसिटी गठित किया गया है।
- इस जिले में 7 तहसील (गंगापुरसिटी, तलावड़ा, वजीरपुर, बामनवास, बत्याणा, टोडाभीम, नादौती है।
- टोडाभीम और नादौती तहसील को करौली से जोड़ा गया है। अन्य सभी को सवाईमाधोपुर से जोड़ा गया है।

दूदू -
- जिला मुख्यालय - दूदू
- जयपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला दूदू गठित किया गया।
- इस जिले में 3 तहसील (मौजमाबाद, दूदू फागी) है।

जयपुर (ग्रामीण)

जिला मुख्यालय - जयपुर

जयपुर जिले का पुनर्गठन कर जयपुर (ग्रामीण) जिला गठित किया गया है।

जयपुर ग्रामीण जिले में 18 तहसील (जयपुर तहसील (जयपुर का नगर निगम जयपुर (हैरिटेज) एवं नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग) तहसील कालवाड़ का नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग, तहसील सांगानेर का नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग, तहसील आमेर का नगर निगम जयपुर (हैरिटेज) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग, जालसू, बस्सी, तूंगा, चाकसू, कोटखावदा, जमवारामगढ़, आंधी, चौमू, फुलेरा (मु.-सांभरलेक), माधोराजपुरा, रामपुरा डाबड़ी, किशनगढ़ रेनवाल, जोबनेर, शाहपुरा) है।

जयपुर –

जिला मुख्यालय - जयपुर

जयपुर जिले का पुनर्गठन कर जयपुर जिला गठित किया गया है।

जयपुर जिले में 4 तहसील (जयपुर तहसील का नगर निगम जयपुर (हैरिटेज) एवं नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग, तहसील कालवाड़ का नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग, तहसील आमेर का नगर निगम जयपुर (हैरिटेज) के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग, तहसील सांगानेर का नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग) है।

कोटपूतली-बहरोड़ –
- जिला मुख्यालय - कोटपूतली-बहरोड़
- जयपुर एवं अलवर जिलों का पुनर्गठन कर नया जिला कोटपूतली- बहरोड़ गठित किया गया है
- कोटपूतली - बहरोड़ जिले में 8 तहसील (बहरोड़, बानसूर, नीमराणा, मांढण, नारायणपुर कोटपूतली, विराटनगर, पावटा) है। कोटपूतली, विराटनगर, पावटा को जयपुर से जोड़ा गया है, अन्य सभी को अलवर से जोड़ा गया है।

खैरथल-तिजारा –
- जिला मुख्यालय – खैरथल
- अलवर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला खैरथल तिजारा गठित किया गया है।
- नवगठित खैरथल-तिजारा जिले में 7 तहसील (तिजारा, किशनगढ़बास, खैरथल, कोटकासिम, हरसोली, टपूकड़ा, मुंडावर) है।

नीम का थाना :-
- जिला मुख्यालय - नीम का थाना है
- सीकर और झुंझुनूं जिलों का पुनर्गठन करके नीमकाथाना का गठन किया गया है।
- इस नवगठित जिले के तहत 4 उपखंड (नीम का थाना, श्रीमाधोपुर, उदयपुरवाटी और खेतड़ी) शामिल किए गए हैं।

- इसमें नीमकाथाना और श्री माधोपुर को सीकर जिले से तथा उदयपुरवाटी और खेतड़ी को झुंझुनू जिले से शामिल किया गया है।

ब्यावर :-

- जिला मुख्यालय - ब्यावर
- अजमेर, पाली, राजसमंद और भीलवाड़ा जिलों का पुनर्गठन करके नया जिला ब्यावर गठित किया गया है।
- इस नव गठित ब्यावर जिले में 6 उपखंड (ब्यावर, टाटगढ़, जैतारण, रायपुर, मसूदा और बिजयनगर) शामिल किए गए हैं।

केकड़ी :-

जिला मुख्यालय - केकड़ी

अजमेर और टोंक जिले को पुनर्गठित करके नया जिला केकड़ी बनाया गया है।

केकड़ी जिले में 5 उपखंड शामिल किए गए हैं। इसमें केकड़ी, सावर, भिनाय, सरवाड़ और टोडारायसिंह शामिल हैं।

सलूम्बर :-

जिला मुख्यालय - सलूम्बर

उदयपुर जिले का पुनर्गठन करके नए जिले सलूम्बर का गठन किया गया है।

सलूंबर जिले में 4 उपखंड (सराड़ा, सेमारी, लसाड़िया और सलूम्बर) शामिल किए गए हैं।

शाहपुरा :-

जिला मुख्यालय - शाहपुरा

भीलवाड़ा जिले का पुनर्गठन करके नया जिला शाहपुरा बनाया गया है।

शाहपुरा जिले में 6 उपखंड (शाहपुरा, जहाजपुर, फूलियाकलां, बनेड़ा और कोटड़ी) शामिल किए गए हैं।

सांचौर :-

जिला मुख्यालय – सांचौर

जालौर जिले का पुनर्गठन करके नए जिले सांचौर का गठन किया गया है।

सांचौर जिले में 4 उपखंड (सांचौर, बागोड़ा, चितलवाना और रानीवाड़ा) शामिल किए गए हैं।

राजस्थान के संभाग

30 मार्च 1949 को राजस्थान में संभागीय व्यवस्था की शुरुआत हुई थी।

शुरुआत में राजस्थान में 5 संभाग (जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, बीकानेर) थे।

24 अप्रैल 1962 को संभागीय व्यवस्था को तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया ने बंद कर दिया।

संभागीय व्यवस्था की पुनः शुरुआत 26 जनवरी 1987 को तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने की तथा अजमेर को जयपुर से अलग कर छठा संभाग बनाया।

4 जून 2005 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने भरतपुर को सातवाँ संभाग बनाया।

7 अगस्त 2023 को रामलुभाया कमेटी की सिफारिश पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा सीकर, पाली और बांसवाड़ा 3 नये संभाग व 19 नये जिले बनाये गये।

3 नवगठित व 7 पुराने संभागों को मिलाकर राजस्थान में कुल 10 संभाग हो गये हैं।

राजस्थान में संभागीय व्यवस्था

कोटा	शिक्षा का तीर्थ स्थल, राजस्थान का नालंदा, औद्योगिक नगरी, राजस्थान का कानपुर, उद्यानों का नगर
डूंगरपुर	पहाड़ों की नगरी
उदयपुर	मेवाड़, प्राग्वाट, मेदपाट, झीलों की नगरी, पूर्व का वेनिस, सैलानियों का स्वर्ग, फाउंटेन और माउंटेन का शहर, [illegible] का [illegible], लेक सिटी, [illegible] नगरी, ऑस्ट्रेलिया जैसी आकृति

राजस्थान के प्राचीन क्षेत्र और वर्तमान स्थिति

यौधेय प्रदेश	अनूपगढ़, गंगानगर, हनुमानगढ़
भटनेर	हनुमानगढ़
शेखावाटी प्रदेश	झुंझुनू, सीकर, चूरू, नीमकाथाना
कुरुक्षेत्र, शाल्व जनपद, आलोर	अलवर
मेवात क्षेत्र / मत्स्य प्रदेश	खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, अलवर, भरतपुर, डीग
ब्रज	कामां (भरतपुर)
कोठी	धौलपुर
गोपालपाल	करौली
डांग क्षेत्र, डांग	करौली, सवाईमाधोपुर
प्राचीन भारत का टाटा नगर, नवाबों का शहर	टोंक
दशार्ण प्रदेश, हाड़ौती प्रदेश	कोटा, बूंदी, झालावाड़, बारां
बृजनगर, चौपीवाड़ा	झालावाड़
मालव प्रदेश	झालावाड़, प्रतापगढ़
वागड़	डूंगरपुर बांसवाड़ा का दक्षिणी भाग
मेवल	बांसवाड़ा व डूंगरपुर के मध्य का भू-भाग
सिरोही जनपद	सिरोही
देवनगरी, चन्द्रावती, अर्बुद	सिरोही
अजयमेरु, गढ़बीटली, सपादलक्ष	अजमेर
जाबालीपुर, जाबालिपुर	जालौर
माड़ प्रदेश, वल्ल, दुंगल	जैसलमेर
जांगल प्रदेश	बीकानेर
थली क्षेत्र	चूरू, हनुमानगढ़, बीकानेर, श्री गंगानगर (चारों की सीमा रेखा जहाँ मिलती है के आस-पास का क्षेत्र)
राजू भाट की ढाणी	गंगानगर
जाट रियासत	भरतपुर, धौलपुर
मत्स्य संघ / शूरसेन	कोटपूतली-बहरोड़, डीग, अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर
अर्जुनायन	डीग, अलवर, भरतपुर
बांगड़ प्रदेश	झुंझुनू, सीकर, नीमकाथाना, डीडवाना-कुचामन, नागौर
जांगलदेश	बीकानेर
पुग्गल	अनूपगढ़
जांगल प्रदेश की राजधानी / अहिछत्रपुर	नागौर
मरुकांतार	बीकानेर, फलौदी, जोधपुर ग्रामीण, बालोतरा, जैसलमेर, बाड़मेर
मारवाड़ / मरुधर	जोधपुर
[illegible]	[illegible]
माण्डव्यपुर	मंडोर
[illegible] / [illegible]	सांभर
गोडवाड़	सांचोर, जालौर, बालोतरा, सिरोही
उपरमाल	बिजोलिया (भीलवाड़ा) भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़)
कांठल	प्रतापगढ़, बांसवाड़ा
सौ द्वीपों का शहर	बांसवाड़ा
तोरावाटी	शेखावाटी क्षेत्र से कांतली नदी का अपवाह क्षेत्र
भोमट क्षेत्र	डूंगरपुर, पूर्वी सिरोही, उदयपुर जिले का अरावली पर्वतीय आदिवासी क्षेत्र
गुर्जरत्रा	जोधपुर जिले का दक्षिणी भाग (मंडोर)
आडावल	अरावली
मेरवाड़ा	अजमेर व राजसमंद जिले का [illegible] क्षेत्र
राठ प्रदेश	अलवर का क्षेत्र

(ब) राजस्थान में मीठे पानी की झीलें -

शॉर्ट ट्रिक

राजस्थान की मीठे पानी की झीलों के नाम-

"जयराज, अना, नडीसि कोका फतेह कर"

सूत्र		झीलें
जय	-	जयसमन्द झील
राज	-	राजसमन्द झील
अना	-	आनासागर झील
न	-	नक्की झील
डी	-	डीडवाना झील
सि	-	सिलिसेढ़ झील
को	-	कोलायत झील
का	-	कायलाना झील
फतेह	-	फतेहसागर झील

विस्तृत वर्णन

- पुष्कर झील -
- राजस्थान राज्य के अजमेर जिले के पुष्कर नामक स्थान पर (अजमेर शहर से 11 किलो मीटर दूर) स्थित पुष्कर झील एक प्रसिद्ध झील है।
- ऐसा माना जाता है कि इस झील का निर्माण पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा करवाया गया था इसलिए इस झील का नाम 'पुष्कर झील' पड़ा, लेकिन भौगोलिक मान्यताओं के अनुसार इस झील का निर्माण ज्वालामुखी से हुआ है इसलिए इसे क्रेटर झील भी कहा जाता है।
- यह राजस्थान की प्राचीन, प्राकृतिक एवं सबसे पवित्र झील है।
- इस झील के किनारे प्रसिद्ध ब्रह्माजी का मंदिर स्थित है ऐसा माना जाता है कि ब्रह्माजी मंदिर में मूर्ति आचार्य शंकराचार्य द्वारा स्थापित की गई थी। इस मंदिर का निर्माण इसकी सदी में पंडित गोकुल चंद पारीक ने करवाया था। (नोट :- राजस्थान के बाड़मेर जिले में आसोतरा नामक स्थान पर एक अन्य ब्रह्माजी का मंदिर है।)
- इस झील को अन्य नामों से भी जाना जाता है, जैसे - कोंकण तीर्थ, तीर्थ स्थलों का मामा 52 घाट मंदिरों की नगरी, प्रजापति का गुरु, हिन्दुओं का पांचवा तीर्थ स्थल इत्यादि।
- इस झील के किनारे कार्तिक माह की पूर्णिमा को मेला लगता है। यह मेला राजस्थान का सबसे बड़ा रंगीन मेला है जो प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को विशाल मेले के रूप में आयोजित किया जाता है। यह मेला राजस्थान में आय की दृष्टि से सबसे बड़ा मेला है।
- महाभारत के बाद पांडवों ने यहाँ स्नान किया था तथा कौरव व पांडवों का मिलाप भी इसी झील के तट पर हुआ था।
- प्राचीन काल में विश्वामित्र ने इसी झील के किनारे तपस्या की थी।

- वेदव्यास जी ने महाभारत की रचना एवं वेदों का संहिताकरण इसी झील के किनारे किया था।
- भगवान राम ने अपने पिता दशरथ का पिंडदान इसी झील में किया था।
- पुष्कर झील में कुल 52 घाट हैं इसलिए इसे बावन घाटों के नाम से भी जाना जाता है इसमें एक महिला घाट भी है जो महिलाओं के स्नान के लिए बनवाया गया था जिसका निर्माण 1911 ई. में मेडम मेरी के द्वारा करवाया गया था। इस घाट को गाँधी घाट के नाम से जाना जाता है।
- इस झील के तट पर प्रसिद्ध वराह मंदिर है जिसका निर्माण आनाजी (अर्णोराज) के द्वारा करवाया गया था।
- इसी झील के तट पर द्रविड़ शैली में निर्मित रंगजी (रंगनाथ जी) बैकुंठ मंदिर है।
- इसी झील के समीप रत्नागिरी पर्वत पर सावित्री मंदिर भी स्थित है।
- कालिदास ने अपने ग्रंथ "अभिज्ञान शाकुंतलम्" की रचना इसी झील के तट पर की थी।
- महात्मा गांधी की अस्थियां इसी झील में प्रवाहित की गई थी इसलिए इस झील को "गांधी घाट" के नाम से भी जाना जाता है।
- इसी झील के समीप आमेर के मानसिंह प्रथम द्वारा निर्मित मान पैलेस है वर्तमान में यहाँ मान पैलेस होटल का संचालन किया जा रहा है।
- इस झील के आस-पास छोटे-बड़े लगभग 400 मंदिर स्थित हैं इस कारण पुष्कर झील को "मंदिरों की नगरी" भी कहा जाता है।
- इस झील को सर्वाधिक हानि पहुंचाने वाला मुगल बादशाह औरंगजेब था।
- सन् 1705 ईस्वी में गुरु गोविंद सिंह इस झील के किनारे गुरु गोविंद साहब का पाठ किया था तथा सन् 1809 में इस झील का पुनरुद्धार मराठों के द्वारा करवाया गया था।
- 1997-98 ई. में कनाडा के सहयोग से यहाँ सफाई कार्य करवाया गया।
- पुष्कर के पंचकुण्ड को "मृगवन" घोषित किया गया है।

जयसमंद झील -

- राज्य के सलूम्बर जिले में स्थित जयसमंद झील को ढेबर झील के नाम से भी जाना जाता है।
- इस झील का निर्माण गोमती नदी, झामरी नदी तथा बगार नदी का पानी रोक कर मेवाड़ के राणा जयसिंह के द्वारा 1685 – 91 में करवाया गया था।
- यह झील एशिया की दूसरी तथा राजस्थान की प्रथम मीठे पानी की सबसे बड़ी, कृत्रिम झील है।
- इस झील पर छोटे-बड़े कुल 7 टापू स्थित हैं जिन पर भील तथा मीणा जनजाति के लोग निवास करते हैं इनमें से सबसे बड़ा टापू "बाबा का भांगड़ा" है जबकि सबसे छोटा टापू "प्यारी" है।
- इस झील के एक टापू का नाम "बाबा का मगरा" भी है जिस पर वर्तमान में एक होटल संचालित किया जा रहा है इस होटल का नाम आइलैण्ड रिसोर्ट है।
- इस झील से सिंचाई के लिए दो नहरें निकलती हैं - इनमें से एक का नाम श्यामपुरा और दूसरी भाट है इन दोनों नहरों की कुल लंबाई 324 किलो मीटर है।
- इस झील की लंबाई 15 किलो मीटर तथा चौड़ाई अधिकतम 8 किलोमीटर है।
- इस झील में 6 कलात्मक छतरियां एवं प्रसाद बने हुए हैं।
- जयसमंद झील से उदयपुर जिले को पीने के पानी की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।
- इस झील के तट पर नर्मदेश्वर शिवालय, चित्रित हवा महल तथा रूठी रानी का महल स्थित है।

- राजसमंद झील -
- राजसमन्द जिले में स्थित इस झील का निर्माण मेवाड़ के राणा राजसिंह के द्वारा गोमती नदी का पानी रोक कर सन् 1662 से 1680 के बीच में करवाया गया था। इस झील की कुल लंबाई लगभग 6.5 किलोमीटर तथा चौड़ाई लगभग 3 किलोमीटर है।
- यह राज्य में एकमात्र ऐसी झील है, जिसका नामकरण किसी जिले के नाम पर हुआ है।
- राजसमंद झील राज्य की दूसरी सबसे बड़ी मीठे पानी की कृत्रिम झील है।
- राजसमंद झील के तट पर एशिया की सबसे बड़ी प्रशस्ति "राज प्रशस्ति" 25 बड़े शिलालेखों पर उत्कीर्ण है। राज प्रशस्ति की रचना राणा "राजसिंह" के दरबारी कवि रणछोड़भट्ट तैलंग के द्वारा की गई थी। संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण इस प्रशस्ति पर 1017 श्लोक उत्कीर्ण हैं।
- राजसमंद झील के तट पर प्रसिद्ध द्वारकाधीश का मंदिर है यहीं पर वल्लभ संप्रदाय की पीठ भी स्थित है। यहाँ पर एक प्रसिद्ध त्यौहार मनाया जाता है जिसको "अन्नकूट महोत्सव" के नाम से जानते हैं।
- राजसमंद झील के तट पर "बिना पति के सती होने वाली घेवर माता का मंदिर" स्थित है।
- इस झील को एक अन्य नाम "राजसमुद्र" के नाम से भी जानते हैं।
- इस झील को राज्य सरकार ने धार्मिक दृष्टि से पुष्कर की तरह पवित्र घोषित किया है अर्थात् राज्य सरकार ने इस झील को सबसे पवित्र झील घोषित किया है।

- पिछोला झील - राज्य के उदयपुर जिले में स्थित पिछोला झील का निर्माण सन् 1387 में राणा लाखा के काल में एक पिच्छू / छित्र नामक चिड़ीमार बंजारे ने अपने बैल की स्मृति (याद) में करवाया था। यह झील उदयपुर की सबसे प्राचीन तथा सबसे सुंदर झील है।
- सन् 1525 ईस्वी में राणा सांगा ने पिछोला झील का जीर्णोद्धार करवाया था इस झील को पक्का करवाने का श्रेय राणा उदयसिंह को जाता है।

12. एडवर्ड सागर झील जिसे गैबसागर (गैबसागर) झील भी कहा जाता है राज्य के डूंगरपुर जिले में स्थित है। इस झील मध्य में पुंज राव (महारावल पुंज) द्वारा निर्मित प्रसिद्ध 'बादल महल' स्थित है तथा तट पर कालीबाई का स्मारक बना हुआ है।
13. मानसागर झील राज्य के जयपुर जिले में स्थित है जबकि मानसरोवर झील राज्य के झालावाड़ तथा सवाई माधोपुर जिले में स्थित है।
14. झालावाड़ जिले में स्थित मानसरोवर झील को कांवला झील भी कहते है।
15. जैसलमेर में स्थित अमरसागर, गड़ीसर झील तथा बुड्ढा मीठे पानी की झीलें है जबकि केचोर तथा कावोद झील खारे पानी की झीलें है।
16. सरदारसमंद झील जोधपुर में स्थित है। इसका निर्माण महाराजा उम्मेदसिंह द्वारा करवाया गया।
17. डोलीबाई का तालाब जोधपुर जिले में स्थित है। यहाँ डोलोमाइट पाया जाता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. कौन सा सुमेलित नहीं है-
(a) बेड़च - गोगुन्दा की पहाड़ियाँ
(b) गम्भीरी नदी - मालवा पहाड़ियाँ
(c) बाणगंगा नदी - बैराठ पहाड़ियाँ
(d) माही नदी - अमझौर की पहाड़ियाँ उत्तर - b

2. राजस्थान की वर्ष पर्यन्त प्रवाहित नदी है ?
(a) बनास (b) चंबल
(c) लूनी (d) साबरमती उत्तर - (b)

3. किस नदी पर ईस्ट-वेस्ट कॉरिडोर के अधीन 'हैंगिंग ब्रिज' बनाया जाना प्रस्तावित है -
(a) कालीसिन्ध (b) बनास
(c) लूनी (d) चंबल उत्तर - (d)

4. निम्न में से कौन सा युग्म सुमेलित नहीं है?

	मुख्य नदी	सहायक नदी
(a)	पश्चिमी बनास	सुकड़ी
(b)	माही	चाप
(c)	बनास	लीलड़ी / सुकड़ी
(d)	लूनी	सागी

उत्तर - (c)

5. अंतः प्रवाहित नदी नहीं है?
(A) साबी (b) काकनी
(c) माही (d) कांतली उत्तर-(c)

6. राजस्थान राज्य में भू-क्षेत्र की लम्बाई की दृष्टि से नदियों का सही आरोही क्रम है-
(a) कांतली - चंबल - लूनी - बनास
(b) चंबल - लूनी - बनास - कांतली
(c) लूनी - बनास - कांतली - चंबल
(d) बनास - कांतली- चंबल- लूनी उत्तर - (a)

7. टॉड रॉक किस झील से संबंधित है-
(a) नक्की झील (b) पुष्कर झील
(c) जयसमंद झील (d) सिलीसेढ़ झील उत्तर (a)

8. निम्न में से कौन सी नदी सांभर झील में गिरती है-
(a) मेंथा (b) कांतली
(c) सांडी (d) मानसी उत्तर- (a)

9. आनासागर झील का निर्माण किसने करवाया -
(a) पृथ्वीराज (b) राजसिंह
(c) अर्णोराज (d) जयसिंह उत्तर - (c)

- यह संस्थान 1966 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के विलयन में आया। काजरी जोधपुर स्थित मुख्यालय से 6 संभाग कार्यरत है।
- इसके चार क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र विभिन्न कृषि-जलवायु स्थितियों में स्थान आधारित समस्यायुक्त अनुसंधान हेतु स्थित है।

14. <u>खुमबुल या विलायती बबूल</u>-भू संरक्षण की दृष्टि से यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वृक्ष है जो मृदा के कटाव पर रोक लगाता है।

15. <u>सिराई गुडाई</u> :-इसका शाब्दिक अर्थ है "खरपतवार हटाना"। राजस्थान में भूमि के कटाव को रोकने के लिए प्रायोगिक भू परिष्करण की प्रक्रिया सिराई गुडाई कहलाती है। इससे भूमि कृषि योग्य बनती है। जिससे फसल का उत्पादन अधिक होता है।

16. **बालसा / चिमाड़ा / द्राविया / -** अरावली पर्वतमाला

"सारांश"

- अमेरिकी वैज्ञानिकों द्वारा 11 भागों में बाँटी गई मृदा के 5 प्रकार राजस्थान में पाए जाते है जो कि एरिडीसोल, एन्टीसोल, अल्फीसोल, वर्टिसोल, इसेप्टीसोल।
- राजस्थान में जलोढ़ मिट्टी को सर्वाधिक उपजाऊ माना जाता है।
- कपास के अधिक उत्पादन के कारण काली मिट्टी को कपासी मिट्टी भी कहा जाता है। यह कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ में पाई जाती है।
- 1952 में स्थापित केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान केन्द्र काजरी- जोधपुर मरुस्थल से संबंधित है।
- निक्षालन की क्रिया द्वारा निर्मित मिट्टी को लेटेराइट कहा जाता है।
- कार्बोनेट एवं हाइड्रोकार्बन तत्वों की अधिकता वाले पानी को लवणीय पानी कहा जाता है।
- मृदा कटाव पर रोक के कारण खुमबुल / विलायती बबूल भू-संरक्षण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वृक्ष है।
- मरुस्थलीय प्रदेश में 90 से 150 Cm. की गहराई में स्थित कठोर चट्टानों को हार्ड पेन कहा जाता है।
- मरुस्थलीय मिट्टी को रेतीली मृदा भी कहा जाता है।
- राष्ट्रीय कृषि आयोग ने राजस्थान के 12 जिलों (वर्तमान में 21) को मरुस्थलीय जिले मानकर 16 जिलों में मरु विकास कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसमें केंद्र सरकार द्वारा 75% तथा राज्य सरकार द्वारा 25% खर्च वहन किया जाता है।

<u>महत्त्वपूर्ण प्रश्न</u>

1. मृदा की क्षारीयता व लवणता की समस्या को दूर करने हेतु प्रयोग किया जाता है

   a. यूरिया b. रॉक-फास्फेट
   c. जिप्सम d. खाद उत्तर - C

2. राजस्थान के किस प्रदेश में एंटिसोल समूह की मृदा मिलती है?

   a. पूर्वी b. पश्चिमी
   c. दक्षिणी -पूर्वी d. दक्षिणी उत्तर- b

3. राजस्थान के किस क्षेत्र में बहुतायत में काली मिट्टी पाई जाती है?

   a. हाड़ौती b. थार
   c. पूर्वी मैदान d. जयपुर क्षेत्र उत्तर- (a)

4. सुमेलित कीजिए :-

   मिट्टी के प्रकार — जलवायु प्रदेश
   a. एरिडीसोल्स — 1. शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क
   b. इनसेप्टीसोल्स — 2. अर्द्ध शुष्क एवं आर्द्र
   c. अल्फीसोल्स — 3. उप-आर्द्र एवं आर्द्र
   d. वर्टिसोल्स — 4. आर्द्र एवं अति आर्द्र

कूट	a	b	c	d
A.	1	3	4	2
B.	1	2	3	4
C.	1	3	2	4
D.	4	1	2	3

   उत्तर - b

5. निम्न में से किस प्रकार की मिट्टी में स्वयं जुताई का गुण पाया जाता है?

   a. काली मिट्टी b. जलोढ़
   b. शुष्क मिट्टी d. लेटेराइट उत्तर - A

अध्याय – 3

हस्तशिल्प

- राजस्थान की हस्तशिल्प विश्व प्रसिद्ध है इसलिए राजस्थान को हस्तकलाओं का अजायबघर / खजाना कहा जाता है।
- हस्तकला उद्योग केन्द्र बोरानाडा, जोधपुर में है।
- हस्तकलाओं का तीर्थ जयपुर को कहते हैं।
- राजस्थान में हस्तकला उद्योग को सर्वाधिक संरक्षण देने वाला संस्थान राजसीको है जिसकी स्थापना 3 जून, 1961 को जयपुर में की गई थी। राजस्थान की हस्तशिल्प वस्तुओं को राजस्थान लघु उद्योग निगम राजस्थली नाम से विपणन करता है।
- वर्ष 1998 की औद्योगिक नीति में हस्तकला उद्योग को सर्वाधिक संरक्षण दिया गया है।

पॉटरी

- चीनी मिट्टी के बर्तनों पर की जाने वाली आकर्षक चित्रकारी पॉटरी कहलाती है।
- पॉटरी का उद्भव ब्रुसिका (सीरिया की राजधानी) में माना जाता है जो फारस, अफगानिस्तान होती हुई भारत आयी।

ब्लू पॉटरी

- चीनी - मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंग से चित्रकारी करना।
- इसके लिए जयपुर प्रसिद्ध है।
- राजस्थान में इसे लाने का श्रेय मानसिंह को है।
- इस कला का सर्वाधिक विकास जयपुर शासक रामसिंह द्वितीय के समय हुआ था।
- इस कला को पुनर्जीवित करने का श्रेय कृपाल सिंह शेखावत को है जिसका प्रथम स्थान मौजूद लिया है।
- कृपाल सिंह शेखावत को 1974 में पद्म श्री पुरस्कार दिया जा चुका है।
- ब्लू पॉटरी की एकमात्र महिला कलाकार नाथी बाई है।

> राजस्थान में ' ब्लू पॉटरी ' का प्रमुख केन्द्र कौन - सा है ?
> (a) बीकानेर (b) डूंगरपुर
> (c) जयपुर (d) जैसलमेर

> राजस्थान की प्रसिद्ध ब्लू पॉटरी की हस्तकारी का उद्भव कहाँ से हुआ है।
> (a) कश्मीर (b) पर्शिया
> (c) अफगानिस्तान (d) सिंध

ब्लैक पॉटरी

- ब्लैक पॉटरी कोटा की प्रसिद्ध है।

कागजी पॉटरी

- कागजी पॉटरी अलवर की प्रसिद्ध है।

सुनहरी पॉटरी

- सुनहरी पॉटरी राजसमन्द की प्रसिद्ध है।

बीकानेरी पॉटरी (सुनहरी पॉटरी)

- इस पॉटरी में लाख का प्रयोग किया जाता है।

मुनव्वती / उस्ता कला

- इस कला में ऊँट की खाल पर सुनहरी नक्काशी की जाती है। यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है।
- हिसामुद्दीन उस्ता कला के प्रमुख चित्रकार है, जिन्हें इस कला के लिए वर्ष 1986 में पद्मश्री दिया गया था। मुहम्मद हनीफ उस्ता, कादर बक्श इसके कारीगर है।
- उस्ताकला को बढ़ावा देने हेतु बीकानेर में कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर की स्थापना 15 अगस्त, 1975 को की गई थी जिसके प्रथम निदेशक हिसामुद्दीन उस्ता को बनाया गया था।
- इलाही बक्श ने ऊँट की खाल पर बीकानेर शासक महाराजा गंगासिंह का चित्र बनाया।

मथैरणा कला

- इस कला में कपड़े पर सुनहरी नक्काशी की जाती है।
- यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है।
- इस कला में ईसर, गणगौर, देवी - देवताओं की भित्ति चित्र बनाये जाते हैं।
- मुन्नालाल, चन्द्रीलाल मथैरणा कला के प्रमुख कारीगर थे।

- मीनाकारी

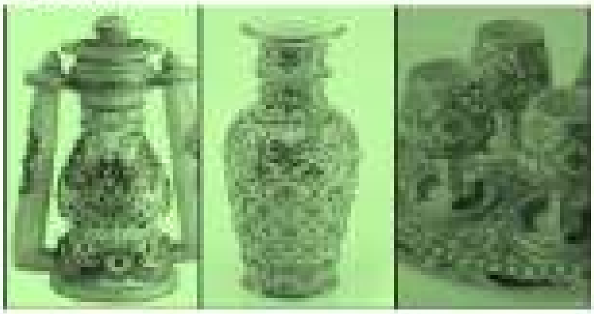

- विभिन्न रंगों की मूल्यवान रत्नों पर सीसे की सहायता से तथा सोने - चाँदी के आभूषणों पर चित्रकारी या रंग भरने की कला को मीनाकारी कहते हैं।
- मीनाकारी कला का उद्गम पर्शिया (ईरान) में माना जाता है।
- लाल रंग बनाने में जयपुर के कलाकार कुशल हैं।
- मीनाकारी में फूल-पत्ती, मोर आदि का अंकन प्रायः किया जाता है।
- कोटा के रेतवाली क्षेत्र में कांच पर विभिन्न रंगों से मीनाकारी का काम किया जाता है।
- कागज जैसे पतले पत्थर पर मीनाकारी करने के लिए बीकानेर के मीनाकार प्रसिद्ध हैं।
- इसे मंगोलों के समय फारस से लाया गया और फारस से मुगलों द्वारा लाहौर में लायी गई जहाँ पर सिक्खों द्वारा यह कार्य किया जाता है।
- लाहौर से महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा आमेर में लाया गया।
- जिसमें मुख्य मीनाकार हरिसिंह, अमरसिंह, किशनसिंह, सोभासिंह, श्यामसिंह थे।
- राज्य में निम्न मीनाकारी प्रसिद्ध है-
  (i) चाँदी पर मीनाकारी- नाथद्वारा, राजसमंद
  (ii) पीतल पर मीनाकार जयपुर
  (iii) तांबे पर मीनाकारी- भीलवाड़ा
  (iv) सोने पर मीनाकारी- प्रतापगढ़
- वर्तमान में जयपुर की मीनाकारी प्रसिद्ध है , जिसमें मुख्य रूप से कुदरतसिंह तथा कुंआ लाल (गुरुचरण सिंह) विख्यात हैं।
- सरदार कुदरत सिंह को 1988 में इस कला के लिए पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

- थेवा कला

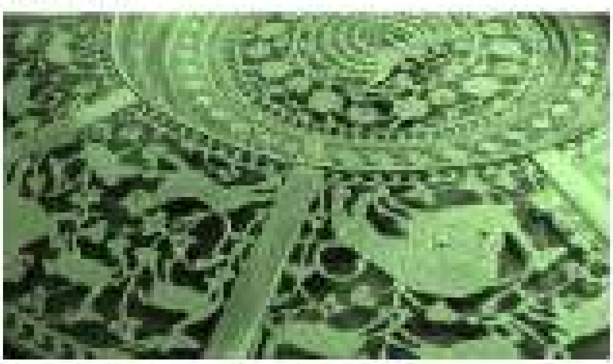

- थेवा कला प्रतापगढ़ की प्रसिद्ध है।
- थेवा कला का नाम इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका में अंकित है।
- काँच पर सोने या चाँदी का सूक्ष्म चित्रांकन जिसमें रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता है। इस कला की शुरुआत लगभग 500 वर्ष पूर्व नाथूजी सोनी ने महारावत सावंत सिंह के समय प्रतापगढ़ में की थी।
- इस कला के लिए प्रतापगढ़ का सोनी परिवार विख्यात है।
- इसे सोनी परिवार भारत का एकमात्र ऐसा परिवार है जिसे किसी हस्तकला के लिए एक ही परिवार के सर्वाधिक व्यक्तियों को राष्ट्रपति पुरस्कार दिया जा चुका है।
- थेवा कला के कारीगर पहीगर कहलाते हैं।

- रत्नाभूषण
- हीरे - जवाहरात-पन्ना का कार्य रत्नाभूषण कहलाता है।
- विश्व की सबसे बड़ी मण्डी जयपुर है।

- कोफ्तगिरी

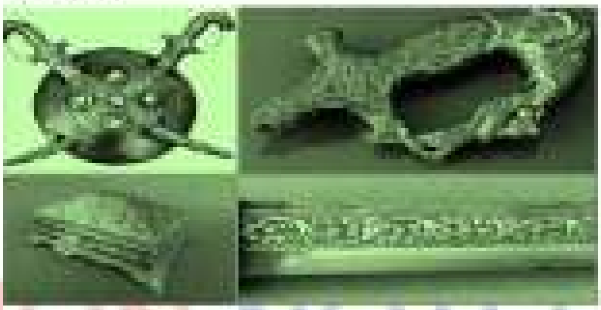

- राजस्थान में इसके प्रमुख केन्द्र जयपुर व अलवर हैं।
- कोफ्तगिरी का कार्य दमिश्क से पंजाब लाया गया और पंजाब से गुजरात तथा गुजरात से राजस्थान लाया गया।
- फौलाद की बनी वस्तुओं पर यह काम सोने के पतले तारों की जड़ाई द्वारा किया जाता है।
- तहनिशां के काम में डिजाइन को गहरा खोद कर उसमें पतला तार भर दिया जाता है। अलवर के तलवार साज एवं उदयपुर के सिकलीगर यह काम सुन्दर ढंग से करते हैं।
- कोफ्तगिरी शिल्प का इस्तेमाल ढाल, तलवारें व खंजर और अन्य उपयोगी सामग्री जैसे डिब्बे, कमले, भोजन काटने और खाने के कटलरी सामान शिकार चाकू, छुरी इत्यादि के निर्माण में किया जाता है
- इसके कलाकार को कोफ्तगर कहा जाता है।

- पिछवाई कला

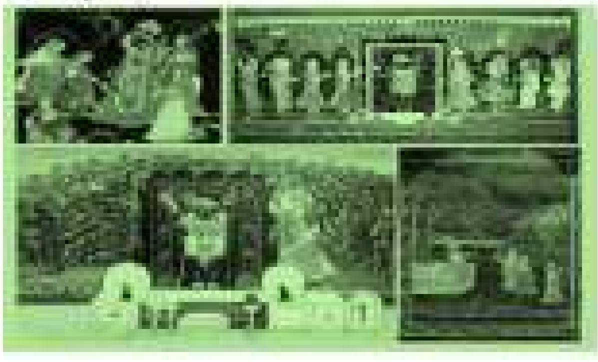

➢ जीण माता

- चौहान वंश की आराध्य देवी।
- ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी।
- मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा है।
- इनके इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा करवाया गया।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढाई प्याला मदिरा पान करती है।
- इन्हें प्रतिदिन ढाई प्याला शराब पिलाई जाती है।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता है।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ है। इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहती हैं।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा है।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी है।
- जीण माता को शेखावाटी क्षेत्र की लोक देवी व मधुमक्खियों की देवी के नाम से जाना जाता है।
- यहाँ अब केवल बकरे के कान चढ़ाते हैं।

राजस्थान के लोक साहित्य में किस देवी - देवता का गीत सबसे लम्बा है ? (RAS 2010) (a) जीणमाता (b) सोनाणी (c) आईमाता (d) तल्लीनाथ जी

➢ कैला देवी

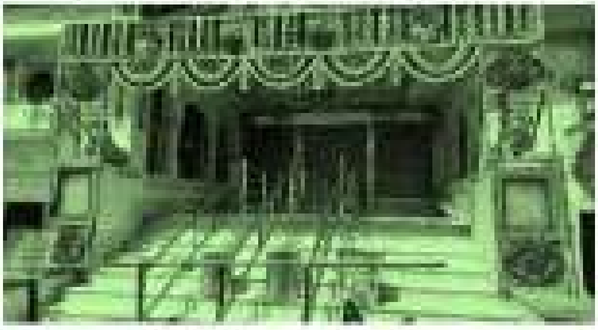

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी।
- इनकी आराधना में लांगुरिया गीत गाये जाते हैं।
- कैला देवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ल अष्टमी को भरता है।
- कैला देवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है।
- कैला देवी को मांस का भोग नहीं लगता।
- इसका मंदिर 16वीं शताब्दी में गोपाल सिंह द्वारा कालीसिल नदी के मुहाने पर त्रिकूट पहाड़ी पर बनवाया गया।
- यहाँ घुटकन नृत्य प्रसिद्ध है जिसे गुर्जर व मीणा जाति के लोग करते हैं।

➢ शिला देवी

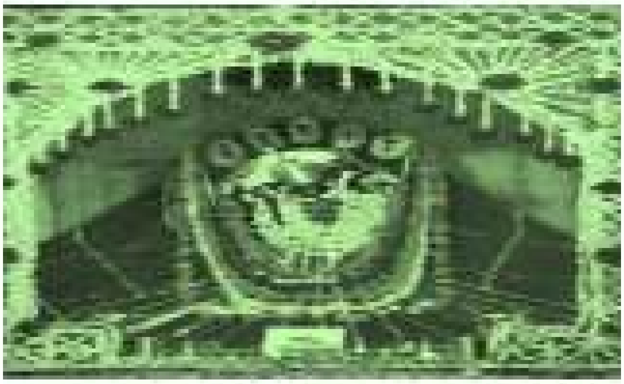

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी।
- इसका मंदिर आमेर दुर्ग में है।
- शिलामाता की यह मूर्ति पाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित है।
- आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा पूर्वी बंगाल के राजा केदार को पराजित कर जस्सोर नामक स्थान से अष्टभुजी भगवती की मूर्ति 16वीं शताब्दी में आमेर लाए थे।
- आमेर लाकर उन्होंने आमेर दुर्ग में स्थित जलेब चौक के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में मंदिर बनवाया था
- मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोई नहीं जीत सकता।
- शिला देवी को ढाई प्याला शराब चढ़ती है तथा भक्तों को शराब व जल का चरणामृत दिया जाता है।

➢ जमुवायमाता

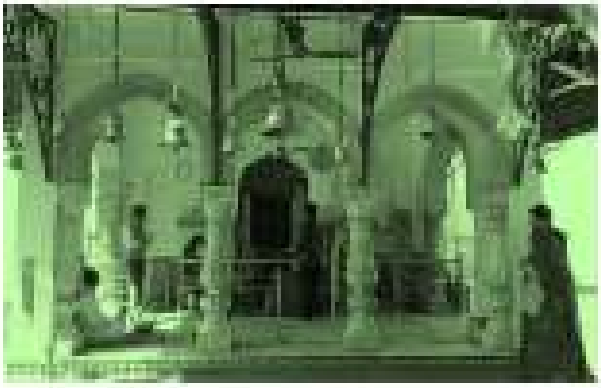

- ढूंढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी।
- इसका मंदिर जमुवा रामगढ़, जयपुर ग्रामीण में है।
- इस मंदिर का निर्माण कछवाहा वंश के दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mK6dtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=IA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)

whatsapp - https://wa.link/0yupe6 1 web.- https://shorturl.at/pwFNP

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO